B.A. Part - I, Paper - II
डॉ० सुनीता कुमारी
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग
मारवाड़ी कॉलेज, दरभंगा।

Topic → प्रत्यक्षवाद (Positivism)

अगस्त कॉम्टे के चिंतन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान प्रत्यक्षवाद (Positivism) रहा है उन्होंने इस अवधारणा को इतना उपयोगी माना कि इसके आधार पर ही सामाजिक घटनाओं की विवेचना की सलाह दी तथा स्वयं इसका उपयोग किया।

कॉम्टे का प्रत्यक्षवाद सामाजिक घटनाओं की एक वैज्ञानिक विवेचना है। इनका मानना है कि विश्व की समस्त घटनाएं किन्हीं अपरिवर्तनीय प्राकृतिक नियमों पर आश्रित है तथा इन्हीं से निर्देशित होती है। यदि इन नियमों की जानकारी लेनी है तो इसके लिए वैज्ञानिक विधि एक विकल्प है। वैज्ञानिक विधि में कल्पना व भावना को कोई स्थान नहीं है। यह अवलोकन तथ्य संग्रह और परीक्षण पर आधारित होती है।

अतः यह कहा जाता है कि प्रत्यक्षवाद सामाजिक घटनाओं का वैज्ञानिक अध्ययन है।

Rollin chambliss ने अपनी पुस्तक social thought में कॉम्टे के प्रत्यक्षवाद को स्पष्ट करते हुए लिखा है "प्रत्यक्षवाद का सम्बन्ध कृतिम

की अपेक्षा वास्तविक से है, काल्पनिक ज्ञान की अपेक्षा उपयोगी ज्ञान से है तथ्यों से है, जिनका किसी निश्चित अंश तक अवलोकन संभव है।

प्रत्यक्षवाद की मान्यताएँ

प्रत्यक्षवाद की मान्यताएँ निम्न हैं –

1) सामाजिक नियम (Social Laws) – कॉम्टे का यह मानना है कि जिस तरह प्राकृतिक घटनाएँ – रात, दिन, ऋतु, गर्मी आदि किन्हीं निश्चित नियमों पर आधारित है, उसी प्रकार सामाजिक घटनाएँ – अपराध, हत्या, बेकारी, वेश्यावृत्ति, आतंकवाद आदि भी निश्चित नियमों पर आधारित हैं।

2) वास्तविक (Real) – Comte का प्रत्यक्षवाद आध्यात्मिक और काल्पनिक विचारों से दूर है प्रत्यक्षवादी चिंतन विशुद्ध रूप से वैज्ञानिक होता है

3) विचार की प्रणाली (Mode of thought) – प्रत्यक्षवाद विचार की एक प्रणाली है जिसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सामाजिक घटनाओं का अध्ययन किया जाता है

4) वैज्ञानिक प्रक्रिया (Scientific Process) – प्रत्यक्षवाद में सामाजिक घटनाओं का वैज्ञानिक प्रक्रिया के द्वारा अध्ययन किया जाता है

इसमें सबसे पहले विषय का चुनाव किया जाता है तत्पश्चात निरीक्षण द्वारा उत्पन्न होने वाले तथ्यों का संकलन किया जाता है और प्राप्त तथ्यों की समानताओं के आधार पर वर्गीकरण किया जाता है और इनका परीक्षण होता है और अन्त में विषय से संबंधित निष्कर्ष प्रस्तुत किये जाते हैं।

इस तरह — पहले विषय का चुनाव होता है, फिर निरीक्षण, वर्गीकरण, परीक्षण और नियमों का प्रतिपादन होता है।

5) ज्ञात से सम्बन्ध — यह काल्पनिक आधार पर कुछ भी करने की राय नहीं देता। यह तथ्यों और कार्यों से कम संबंधित होकर कैसे यानि क्रियाशीलता के नियमों से अधिक सम्बन्धित है।

6) मानवता का धर्म (Religion of Humanity) कॉम्टे का प्रत्यक्षवाद का लक्ष्य सम्पूर्ण मानव समाज के भौतिक, बौद्धिक तथा नैतिक कल्याण में वृद्धि रहा है।

7) सामाजिक पुनर्निर्माण (Social Reconstruction) इन्होंने पॉजिटिव पॉलिटी में सामाजिक पुनर्निर्माण की योजना दी थी जिसमें प्रेम व सद्भावना के आधार पर भौतिक बौद्धिक और नैतिक प्रगति करने के

प्रत्यक्षवाद का विभाजन
(Division of Positivism)

(1) विज्ञानों का दर्शन (Philosophy of sciences) - इसका तात्पर्य यह है कि मानव की सामाजिक उन्नति व सुधार के लिए अपने ज्ञान पर निर्भर रहना चाहिए। इस विज्ञान के दर्शन के अन्तर्गत आने वाले जिस विज्ञान का उल्लेख कॉम्टे ने किया है वे हैं - (1) गणित (2) ज्योतिषशास्त्र (3) भौतिकशास्त्र (4) रसायनशास्त्र (5) प्राणीशास्त्र (6) समाजशास्त्र और नीतिशास्त्र।

(2) वैज्ञानिक धर्म व नीति (Scientific Religion and Ethic) - इसके अन्तर्गत अलौकिक व अदृश्य की अपेक्षा मानवता की पूजा व सेवा प्रधान है। इसका उद्देश्य मनुष्य व समाज की भौतिक, बौद्धिक, नैतिक शक्तियों का विकास है।

3) प्रत्यक्ष राजनीति (Positive Politics) - प्रत्यक्षवाद प्रत्यक्ष राजनीति के दो मूल उद्देश्यों पर केन्द्रित है - (1) इसका उद्देश्य संसार से युद्ध की समाप्ति है। (2) यूरोप के समस्त राज्यों को मिलाकर एक मित्र राष्ट्र का निर्माण करना माना गया है।

इस प्रकार कॉम्टे का प्रत्यक्षवाद एक वैज्ञानिक सिद्धान्त, मानव धर्म और नीति व व्यवस्था का समन्वित रूप है।

आलोचना (Critical Evalution) —

(1) विचारकों का कहना है कि प्रत्यक्षवाद के जन्मदाता स्वयं ही सबसे कम प्रत्यक्षवादी थे। Comte ने अपनी पुस्तक ~~पॉजिटिव~~ 'पॉजिटिव फिलासफी' में जिस वैज्ञानिक मत 'प्रत्यक्षवाद' का प्रतिपादन किया उसे स्वयं निभा न सके। Comte का मानना था कि उनका प्रत्यक्षवाद विज्ञान के साथ-साथ मानव धर्म भी है इस आधार पर उन्होंने स्वयं प्रत्यक्षवाद के अन्तर्गत नैतिकता को स्थान दिया।

J.S. Mill ने इसी आरोप के साथ Comte से अपना संबंध तोड़ा था।

(2) Comte का प्रत्यक्षवाद मुख्य रूप से भावी समाज विषयक कल्पना पर आधारित है। इसी ओर उन्होंने स्वयं अपने प्रत्यक्षवाद के सिद्धान्त के संदर्भ में इस बात का जिक्र किया है कि प्रत्यक्षवाद में कल्पना व भावना का कोई स्थान नहीं है।

इन बातों के बावजूद भी Levy Bruhl और Howking आदि विद्वानों ने Comte के प्रत्यक्षवाद को सराहा है।

Sunita Kumari
19/4/20.

Scanned by CamScanner